

12/11/2021

बचपन

बचपन, हमारी जिंदगी का ऐसा दौर जो हर किसी को प्यारा होता है, जिस में हमें किसी भी चीज़ से कुछ लेना देना नहीं होता। हम अपने आप में ही मगन होते हैं। खेल-कूद के अलावा कुछ नहीं करते, और यही तो हमारे बचपन को निश्चास्ता है।

बचपन में हमारे मन में बहुत से प्रश्न होते हैं। जैसे :- मैं जब छोटी थी तब मैं सोचती थी कि ये चिड़िया कहाँ सोती होगी? एक दिन सुबह जब मैंने एक चिड़िया को बिजली के तार पर बैठे देखा तो मुझे लगा कि वह बिजली के तार पर ही सोती होगी। पर मैंने ढाढ़ी से पुछा, तो उन्होंने कहाँ की जैसे हम घर में रहते हैं वैसे ही चिड़िया भी पेड़ पर घोंसला बनाकर रहती है।

बचपन में ही हम बहुत सारी नई चीज़ें सीख पाते हैं क्योंकि बचपन में हम ज्यादा स्वनात्मक होते हैं, और अगर किसी भी चीज़ में दिलचस्पी आ गई तो पूरी निष्ठा से उसे पुरा करते हैं।

मुझे अब भी याद है कि जब भी मैं पाठशाला से वापस आती थी तो सीधे ग्रहकार्य करने में लग जाती थी। पाँच-छे बार भी आवाज देने पर सुनई नहीं देता था, मानो मैं उस कार्य में डूब गई हूँ। पर फिर जो डाँट पड़ती थी, ओ हो हो! क्या ही कहूँ। पर पता नहीं कहाँ से वो जिदूँ जिदूँ मुझे वहाँ से उठने ही नहीं देती थी, कि रक काम खतम होने के बाद ही कुछ दूसरा काम करेंगी।

ग्रहकार्य पूरा करने के बाद पाठशाला के कपड़े बदलती थी और फिर जब खाना खाने जाती थी तो साथ में डाँट-फटकार बोलस में मिलते थे। पर फिर भी कुछ फरक नहीं पड़ता था अगले दिन फिर यही कहानी। मैंने तो सन मना लिया था कि "यही कहानी जिंदगी की।"

Name: वैष्णवी गणेश मंडा

Class: 12वीं

E-mail: Vaishnavimansa@gmail.com.